

B. Com. (Hons)

P3 - A/c & Finance  
(H)

Paper - VI

Cost & Management  
Accounting

Date - 14.07.2020.

श्री अशोक कुमार  
सहाय, प्रोफेसर  
वाणिज्य विभाग  
V.S.T. महाविद्यालय  
राजमहल, मुंबई

UNIT - II

TOPIC - ELEMENTS OF COST

सामग्री: किसी वस्तु के उत्पादन के

संबंधित और मूल्य देने के लिए, उन्हें लागत के तत्व कहा जाता है। प्रत्येक वस्तु के उत्पादन में कच्ची सामग्री, श्रम तथा अन्य व्यय शामिल हैं। इन व्ययों में से कुछ ऐसे व्यय होते हैं जिन्हें लागत के तत्व कहा जाता है, जैसे प्रत्येक व्यय को माना जाता है, जो वस्तु के उत्पादन के प्रत्येक संघटक नहीं होता है, बल्कि इसे संकलित करने के लिए अप्रत्यक्ष व्यय कहा जाता है।

लागत के तत्व

लागत के तत्व तब विभाजित हैं :-

- (A) सामग्री (MATERIALS)
- (B) श्रम (LABOUR)
- (C) व्यय (EXPENSES)

(A) सामग्री :- किसी भी वस्तु के निर्माण में सामग्री का सबसे प्रमुख व्यय माना जाता है। क्योंकि इसे वस्तु के निर्माण करने के लिए वस्तु के तैयार करने में शामिल नहीं है। सामग्री मूल्य के प्रकार दो प्रकार के हैं :-

(i) प्रत्यक्ष सामग्री - अर्थात् वह सामग्री जो उत्पादन होने वाली वस्तु में प्रत्यक्ष रूप से प्रयुक्त



की जाती है, तथा उत्पादन का प्रमुख अंग माना जाता है, उन्हीं प्रमुख सामग्री को, आयात है। इसी सामग्री का निर्मित वस्तु में अधिक अद्वितीय होता है तथा निर्मित वस्तु में लगी इसकी मात्रा तथा प्रत्येक का प्रयोग है माना जा सकता है। उदाहरणस्वरूप - फीचर बनाने के लिए इस्तेमाल में लम्बी गयी लकड़ी, मकम बनाने के लिए ईंट व सीमेंट आदि।

उच्च अप्रत्यक्ष सामग्री :- वही सामग्री जो स्वयं ही किसी वस्तु मात्र का हिस्सा नहीं बनता है बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से मात्र के उत्पादन में सम्मिलित होती है उन्हीं अप्रत्यक्ष सामग्री को, आयात है। उदाहरणस्वरूप - मशीनों की भाँति रखने के लिए आवश्यक तैयार व सजाई के लिए प्रयोग, बिजली आदि काया कक्षा।

(B) श्रम (LABOUR) :- मानव का इसका महत्वपूर्ण तत्व श्रम ही माना जाता है। उत्पादन कार्य में सम्पूर्ण शक्तियों की जो मजदूरी ही जाती है, उन्हीं सम्बन्धित वस्तु की मात्रा में श्रम मात्र के रूप में सम्मिलित किया जाता है। मात्र के उत्पादन में प्रयुक्त श्रम को भी दो वर्गों में बाँटा जाता है -

— (1) प्रत्यक्ष श्रम :- वस्तु के निर्माण में जो शक्ति स्वयं अपने हाथों से काम करते उत्पादन करता है, उन्हीं प्रत्यक्ष श्रम कहा जाता है। जैसे फीचर निर्माण में बर्तन का श्रम, कक्षा बुनने में जूताई का श्रम आदि।

— (2) अप्रत्यक्ष श्रम :- वही शक्ति जो उत्पादन कार्य को चलाते में सम्मिलित करते हैं, उन्हीं को श्रम दिया जाता है। उन्हीं अप्रत्यक्ष श्रम कहा जाता है। जैसे अधिक प्रत्यक्ष रूप से उत्पादन के कार्य को नहीं करते बल्कि उत्पादन क्रिया को आवश्यक सुचारु प्रदान करते हैं। जैसे - फीचर, मशीन तथा यंत्रों का आदि। वही श्रम ही उपरिभक्त का मात्रा माना जाता है।



(c) व्यय (Expenses) :- व्यापारी तथा राजा की  
 हीदत वला है उत्पादन, प्रवाह, निर्यात एवं विपणन के संबंध  
 में किए जाने वाले सभी प्रकार के व्यय के अंतर्गत आते हैं।  
 व्यापक रूप से व्यय की दो श्रेणियों में बांटा जाता है :-

(i) प्रारम्भ व्यय :- वस्तु निर्माण के प्रथम प्रयत्न  
 में व्यापारी एवं प्रारम्भ व्यय के अन्तर्गत कई प्रकार के  
 व्यय होते हैं जैसे - दफ्तरी खर्च, आवागमन, प्रशिक्षण, शीतल पदार्थ,  
 और जो उस वस्तु पर विशेष धन है किसे आसानी और अधिक  
 निरूपण से ही उच्च वस्तु पर लगाया जा सकता है, इसे (सर्वोच्च)  
 प्रारम्भ व्यय कहा जाता है। उदाहरण - व्यापक - प्रारम्भ व्यय  
 की दृष्टि से व्यय की कार्यकर्ता तक नहीं है, क्योंकि जो व्यय  
 व्यापक निष्कासन के प्रथम प्रारम्भ व्यय व व्यय में शामिल  
 किया जाता है।

प्रारम्भ व्यय के अंतर्गत निम्न शिर्षक हैं  
 शामिल किए जाते हैं :-

- (a) आनुवंशिक गार्डन भाड़ा
- (b) विशेषज्ञों का भाषांतरण और जीवन निर्वाह व्यय
- (c) मशीन भाडो के दिनांक तथा अधिभार व्यय
- (d) डीका लेने के संबंध में किये गये कार्रवाई व्यय
- (e) विशेष कार्य हेतु लगाये गये मशीन के  
 अधिभार व्यय।

(ii) अप्रारम्भ व्यय :- जैसे व्यय जो केवल किसी  
 एक विशेष कार्य के ही संबंधित नहीं होते हैं बल्कि उत्पादन  
 के अन्तर्गत सभी कार्य के संबंधित होते हैं, उसे अप्रारम्भ  
 व्यय कहा जाता है। उचित अंतर्गत निम्न शिर्षक व्ययों को  
 शामिल किया जाता है :-

- (a) कारखाना व्यय (Factory on cost)
- (b) कार्यालय व्यय (Administrative  
 Exp. and Administration)
- (c) विक्रय एवं विपणन व्यय (Selling & Distribution  
 Exp.)